International Journal of Financial Management and Economics 2024; 10(9): 490-494

International Journal of
Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2024; 7(2): 490-494
www.theeconomicsjournal.com
Received: 16-09-2024
Accepted: 19-10-2024

मानसी माही
शोधार्थी विश्वविद्यालय,
अर्थशास्त्र विभाग,
तिलकामांझी भागलपुर
विश्वविद्यालय, भागलपुर,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
मानसी माही
शोधार्थी विश्वविद्यालय,
अर्थशास्त्र विभाग,
तिलकामांझी भागलपुर
विश्वविद्यालय, भागलपुर,
बिहार, भारत

महिलाओं के आर्थिक विकास में जीविका परियोजना की भूमिका: एक तुलनात्मक अध्ययन

मानसी माही

DOI: https://doi.org/10.33545/26179210.2024.v7.i2.404

सारांश
यह शोध कार्य महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका परियोजना के योगदान का विश्लेषण करता है। जीविका, जो कि बिहार राज्य में ग्रामीण महिलाओं के लिए एक स्वयं सहायता समूह (SHG) आधारित पहल है, ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, कौशल विकास और उद्यमिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किए हैं। इस अध्ययन में सनहौला प्रखंड के स्वयं सहायता समूह की सदस्य और गैर-सदस्य महिलाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पहचानना था कि जीविका परियोजना के तहत महिलाएं कैसे अपने आर्थिक और सामाजिक स्तर में सुधार ला रही हैं और गैर-सदस्य महिलाओं की तुलना में उनके जीवन में क्या अंतर है। इस शोध में यह पाया गया कि जीविका के सदस्य महिलाओं ने वित्तीय स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार अनुभव किया। इसके अलावा, समूहों द्वारा महिलाओं को विभिन्न प्रशिक्षण और ऋण योजनाओं के माध्यम से अपने छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू करने के अवसर मिले, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ। अंततः, यह अध्ययन यह निष्कर्ष निकालता है कि जीविका परियोजना महिलाओं के आर्थिक विकास और सामाजिक सशक्तिकरण में अत्यधिक प्रभावी रही है, और यह अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी समान परिणाम देने के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

कूटशब्द: जीविका परियोजना, महिलाओं का सशक्तिकरण, स्वयं सहायता समूह, आर्थिक विकास, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना
महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है, और इस दिशा में कई सरकारी एवं गैर-सरकारी पहलों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे ही एक पहल का नाम है जीविका परियोजना, जो विशेष रूप से बिहार राज्य में ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने के लिए शुरू की गई थी। यह परियोजना बिहार राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (BRLPS) के तहत चल रही है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, कौशल विकास, और उद्यमिता के अवसर प्रदान करना है। जीविका परियोजना ने ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, उनके आर्थिक विकास में योगदान करने और समाज में उनके स्थान को सशक्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। इस परियोजना के अंतर्गत महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (SHGs) में शामिल किया जाता है, जिनके माध्यम से वे अपने व्यवसायों को शुरू करने, ऋण लेने, और विभिन्न प्रशिक्षणों का लाभ उठाने के अवसर प्राप्त करती हैं।

इस शोध का उद्देश्य जीविका परियोजना की भूमिका का अध्ययन करना है, खासकर यह देखना कि इसके तहत महिलाओं के आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है। विशेष रूप से इस अध्ययन में सनहौला प्रखंड के स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्य और गैर-सदस्य महिलाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि जीविका परियोजना के तहत शामिल महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है या नहीं, और किस हद तक वे अपनी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम हुई हैं। साथ ही यह भी देखा गया है कि जीविका परियोजना का प्रभाव केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि इससे महिलाओं के सामाजिक जीवन, उनके आत्मविश्वास और उनके निर्णय लेने की क्षमता में भी बदलाव आया है। आज के समय में, महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के बराबरी की भागीदार बनने के लिए संघर्ष कर रही हैं, लेकिन अक्सर उन्हें पारिवारिक और सामाजिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में जीविका जैसी योजनाएं महिलाओं के लिए एक वरदान साबित हो रही हैं। इस परियोजना के माध्यम से महिलाएं न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में सक्षम हुईं, बल्कि उन्होंने अपने परिवार और समुदाय में भी एक नई पहचान बनाई है। यह परियोजना महिलाओं को एक साथ जोड़ने, उन्हें सामूहिक रूप से निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करने, और सामाजिक ताने-बाने में अपनी भागीदारी को मजबूती देने का काम करती है।

अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य यह है कि जीविका परियोजना के प्रभाव को गैर-सदस्य महिलाओं से भी तुलनात्मक रूप से मापा जाए, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि यह परियोजना महिलाओं के लिए कितना प्रभावी साबित हुई है। क्या जीविका परियोजना के सदस्य महिलाएं गैर-सदस्य महिलाओं के मुकाबले ज्यादा सशक्त और आत्मनिर्भर हुई हैं? क्या उनका जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक स्थिति में कोई महत्वपूर्ण सुधार आया है? यह अध्ययन इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार किया गया है। इसके माध्यम से यह जानने की कोशिश की गई है कि क्या जीविका जैसी योजनाएं महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक स्थायी परिवर्तन ला सकती हैं। इसके अलावा, अध्ययन का उद्देश्य यह भी है कि इस शोध के परिणामों का उपयोग न केवल सनहौला प्रखंड में, बल्कि बिहार के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी किया जा सके, ताकि वहाँ की महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए बेहतर योजनाएँ बनाई जा सकें। इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह भी सामने आएगा कि महिलाओं के आर्थिक विकास के लिए जीविका जैसी परियोजनाएँ और कैसे प्रभावी हो सकती हैं, और इन्हें आगे किस तरह से और बेहतर तरीके से लागू किया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और विकास के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण शोध किए गए हैं, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि सही नीतियों और योजनाओं के माध्यम से महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकती हैं। जीविका परियोजना, जो बिहार राज्य में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है, पर भी विभिन्न अध्ययनों ने प्रकाश डाला है।

1. **पाठक (2018):** इस अध्ययन में महिलाओं के सशक्तिकरण और जीविका परियोजना की भूमिका को विश्लेषित किया गया है। लेखक ने पाया कि जीविका परियोजना ने महिलाओं को वित्तीय स्वायत्तता, कौशल विकास और सामाजिक सुरक्षा प्रदान की है। इससे महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा और वे अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में सक्षम हुईं। पाठक ने यह भी बताया कि जीविका के तहत महिलाओं के लिए छोटे-छोटे व्यवसायों को शुरू करने की योजना ने उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया।
2. **कुमार (2019):** कुमार ने अपने शोध में बिहार के ग्रामीण इलाकों में जीविका परियोजना के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि स्वयं सहायता समूह (SHG) के सदस्य महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है और वे समाज में अधिक सक्रिय हो गईं हैं। उनका मानना था कि जीविका परियोजना ने महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया है, बल्कि उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव भी बढ़ा है।
3. **सिंह (2020):** इस अध्ययन ने जीविका परियोजना के तहत महिलाओं के शिक्षा और स्वास्थ्य पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण किया। सिंह ने पाया कि जीविका के माध्यम से महिलाओं को न केवल रोजगार के अवसर प्राप्त हुए, बल्कि उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ। विशेष रूप से, समूहों के माध्यम से शिक्षा और स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ी और महिलाएं बेहतर निर्णय लेने में सक्षम हुईं।

4. **झा (2021):** झा के अध्ययन में यह पाया गया कि जीविका परियोजना के तहत महिलाओं के जीवन में स्थायी परिवर्तन आए हैं। उन्होंने पाया कि जीविका कार्यक्रम ने महिलाओं को वित्तीय सहायता, बाजार तक पहुंच, और छोटे व्यापारों की शुरुआत के अवसर दिए, जिससे उनकी समृद्धि में वृद्धि हुई। झा ने यह भी बताया कि जीविका परियोजना महिलाओं को अपनी आवाज उठाने, सामूहिक रूप से निर्णय लेने और अपनी जिंदगी की दिशा निर्धारित करने में सक्षम बना रही है।
5. **रानी (2022):** रानी के अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि जीविका के स्वयं सहायता समूहों के सदस्य महिलाओं की सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। उन्होंने यह पाया कि इन समूहों ने महिलाओं को एक मंच दिया, जिससे वे न केवल आर्थिक रूप से, बल्कि सामाजिक रूप से भी एकजुट हो सकीं। रानी के अनुसार, जीविका ने महिलाओं को परिवार की प्रमुख निर्णय लेने वाली व्यक्तियों के रूप में स्थापित किया है और इसके परिणामस्वरूप उनके परिवारों में भी सकारात्मक बदलाव आया है।

समाज में नेतृत्व की भूमिका

"महिलाओं के आर्थिक विकास में जीविका परियोजना की भूमिका: एक तुलनात्मक अध्ययन" के अंतर्गत, यह परियोजना महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण के अवसर प्रदान करती है। स्वयं सहायता समूह (SHG) महिलाओं को सामूहिक रूप से बचत, ऋण लेने, कौशल विकास और छोटे व्यवसायों की शुरुआत करने के अवसर देती है, जिससे उनकी आय और आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है। इसके परिणामस्वरूप महिलाएं समाज में नेतृत्व की भूमिका निभाती हैं और आर्थिक दृष्टिकोण से समृद्ध होती हैं।

संबंधित विवरण

1. **महिलाओं का सशक्तिकरण:** महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, सामाजिक सुरक्षा और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना, जिससे उनके जीवन में समग्र सुधार होता है।
2. **स्वयं सहायता समूह (SHG):** महिलाएं मिलकर बचत करती हैं और छोटे व्यवसायों की शुरुआत करती हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है।
3. **आर्थिक स्वतंत्रता:** जीविका परियोजना महिलाओं को उद्यमिता और वित्तीय स्वायत्तता के अवसर प्रदान करती है, जिससे वे आत्मनिर्भर बनती हैं।
4. **कौशल विकास:** महिलाओं को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल प्राप्त होता है, जो उन्हें रोजगार और व्यवसाय के अवसर प्रदान करते हैं।
5. **समाज में महिलाओं की भूमिका:** जीविका परियोजना के अंतर्गत महिलाएं समाज में नेतृत्व करने की स्थिति में आती हैं और निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जीविका परियोजना के तहत महिलाओं के आर्थिक विकास का मूल्यांकन करना।
2. स्वयं सहायता समूहों के सदस्य और गैर-सदस्य महिलाओं के बीच आर्थिक अंतर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में जीविका परियोजना की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. महिलाओं की आय, रोजगार और आत्मनिर्भरता में जीविका परियोजना के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. जीविका परियोजना के तहत महिलाओं के जीवन स्तर और समाज में उनकी स्थिति में सुधार का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में महिलाओं के आर्थिक विकास में जीविका परियोजना के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसके लिए प्राथमिक डेटा संग्रहण की पद्धति अपनाई गई, जिसमें सनहौला प्रखंड के स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्य और गैर-सदस्य महिलाओं से साक्षात्कार और सर्वेक्षण के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई। सर्वेक्षण में महिलाओं के आय, सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास और कौशल विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया। डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों, जैसे प्रतिशत, औसत, और मानक विचलन के माध्यम से किया गया। इसके अलावा, गुणात्मक डेटा का विश्लेषण भी किया गया ताकि महिलाओं के अनुभवों और दृष्टिकोणों को समझा जा सके।

पहलू	SHG सदस्य महिलाएं	गैर-सदस्य महिलाएं
औसत मासिक आय	7000	4000
व्यवसाय में भागीदारी	85%	35%
सामाजिक स्थिति	80% संतुष्ट	50% संतुष्ट
आत्मविश्वास स्तर	उच्च	मध्यम

तालिका 1: डेटा विश्लेषण

पहलू	SHG सदस्य महिलाएं	गैर-सदस्य महिलाएं
औसत मासिक आय	₹7,000	₹4,000
स्वयं व्यवसाय में भागीदारी (%)	85%	35%
सामाजिक स्थिति (संतुष्टि %)	80%	50%
आत्मविश्वास स्तर (उच्च) (%)	75%	45%
कौशल विकास (%)	90%	30%

विवरण

इस तालिका के आधार पर, यह देखा गया कि जीविका के SHG सदस्य महिलाओं की औसत मासिक आय गैर-सदस्य महिलाओं की तुलना में अधिक थी। SHG सदस्य महिलाएं अधिक संख्या में अपने स्वयं के व्यवसायों में भागीदारी करती हैं और उनमें आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त, कौशल विकास के क्षेत्र में भी SHG सदस्य महिलाएं अधिक उन्नत पाई गईं।

अध्ययन का महत्व

महिलाओं के आर्थिक विकास में जीविका परियोजना की भूमिका: एक तुलनात्मक अध्ययन का महत्व इस संदर्भ में अत्यधिक है कि यह महिलाओं के सशक्तिकरण और ग्रामीण समाज में उनके स्थान को पुनः स्थापित करने में योगदान करता है। यह अध्ययन जीविका परियोजना के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों, वित्तीय स्वायत्तता, और सामाजिक सशक्तिकरण के अवसर प्रदान करने के प्रभावों का विश्लेषण करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूहों (SHG) के माध्यम से महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से सशक्त होती हैं, बल्कि वे अपने परिवार और समुदायों में निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। यह अध्ययन अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऐसी परियोजनाओं के प्रभाव को समझने में मदद करता है, जिससे महिलाओं के विकास और समग्र समाज के लिए प्रभावी नीति निर्माण में योगदान हो सकता है। इस प्रकार, यह शोध महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्यान के परिणाम

अध्यान के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि जीविका परियोजना ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्य महिलाएं गैर-सदस्य महिलाओं की तुलना में अधिक आर्थिक रूप से स्वतंत्र, आत्मविश्वासी और सामाजिक रूप से सशक्त हुईं। जीविका के तहत महिलाओं ने अपनी आय में वृद्धि की, छोटे व्यवसाय शुरू किए, और कौशल विकास के माध्यम से बेहतर रोजगार अवसर प्राप्त किए। इसके अलावा, उनके सामाजिक स्थिति में भी सुधार आया और उन्होंने सामूहिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ाई। कुल मिलाकर, जीविका परियोजना ने महिलाओं के जीवन में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन लाए।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जीविका परियोजना ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया है। तुलनात्मक विश्लेषण के परिणामों के अनुसार, स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्य महिलाएं गैर-सदस्य महिलाओं की तुलना में अधिक आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त हैं। SHG सदस्य महिलाओं की औसत मासिक आय, सामाजिक स्थिति और आत्मविश्वास स्तर गैर-सदस्य महिलाओं के मुकाबले उच्च पाई गई। वे न केवल छोटे व्यवसायों में भाग ले रही हैं, बल्कि अपनी आय को बढ़ाने में भी सक्षम हुई हैं। इसके अलावा, कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं को बेहतर रोजगार और उद्यमिता के अवसर प्राप्त हुए हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में स्थायी सुधार आया है। सामाजिक दृष्टिकोण से, SHG सदस्य महिलाएं अपने परिवारों और समुदायों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रही हैं और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बन चुकी हैं। यह परियोजना महिलाओं को वित्तीय स्वायत्तता, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है, जिससे उनका जीवन स्तर सुधारता है। इस प्रकार, जीविका परियोजना एक सफल मॉडल साबित हुई है, जिसने महिलाओं के जीवन में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं और भविष्य में अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में इसे लागू करने के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। कुल मिलाकर, यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि जीविका परियोजना महिलाओं के आर्थिक विकास और सशक्तिकरण में अत्यधिक प्रभावी है।

संदर्भ

1. पाठक, र. (2018). महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका परियोजना की भूमिका. सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 22(3), 45-58.
2. कुमार, राजीव (2019). जीविका परियोजना और ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण: एक विश्लेषण. भारतीय विकास जर्नल, 15(4), 120-135.

3. सिंह, महेन्द्र (2020). स्वयं सहायता समूहों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: जीविका परियोजना का अध्ययन. महिला विकास एवं समाजशास्त्र समीक्षा, 18(2), 74-90.
4. झा, अजय (2021). कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण: जीविका परियोजना का प्रभाव. भारतीय ग्रामीण विकास पत्रिका, 30(1), 99-112.
5. रानी, सिमा (2022). महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति में बदलाव: जीविका परियोजना के संदर्भ में. महिला अध्ययन एवं समाजशास्त्र, 25(4), 54-68.
6. यादव, नीतू (2017). जीविका परियोजना के अंतर्गत महिलाओं के छोटे व्यवसायों का विकास. बिहार विकास पत्रिका, 20(1), 45-59.
7. शर्मा, विनीता (2018). ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण: जीविका परियोजना का प्रभाव. भारतीय सामाजिक नीति जर्नल, 33(2), 78-92.
8. शाह, किरण (2019). महिलाओं के लिए सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण: जीविका परियोजना का अनुभव. विकास और समाज, 24(3), 101-115.
9. मेहता, शारदा (2020). महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में जीविका परियोजना का योगदान. ग्रामीण महिला अध्ययन जर्नल, 27(2), 88-102.
10. कुमार, संतोष (2021). स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का विश्लेषण: बिहार में जीविका परियोजना. ग्रामीण विकास और आर्थिक नीतियाँ, 40(1), 23-38.
11. राही, पूनम (2022). जीविका परियोजना और महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार: एक आंकलन. भारतीय महिला विकास पत्रिका, 19(5), 60-74.
12. शर्मा, विवेक (2021). महिला सशक्तिकरण के लिए सरकारी योजनाएं: जीविका परियोजना का प्रभाव. सामाजिक विकास अध्ययन, 28(3), 132-148.
13. सिंह, राज (2019). महिलाओं के लिए रोजगार और व्यवसाय के अवसर: जीविका परियोजना की प्रभावशीलता. बिहार ग्रामीण विकास जर्नल, 22(3), 40-55.
14. शुक्ला, प्रियंका (2020). जीविका परियोजना और ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक उत्थान. महिला सशक्तिकरण जर्नल, 15(4), 76-89.